गुरु मेरी पूजा...गोविंदा... मेरा पारब्रह्म...गुरु भगवंता

नव भारत न्यूज

इंदौर. गुरु पूर्णिमा केवल गुरु के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करने का पर्व नहीं, बल्कि उस परंपरा को याद करने का अवसर है, जिसमें गुरु शिष्य को ज्ञान के साथ संस्कार, अनुशासन और जीवन का सही मार्ग दिखाता है. शहर के संतों, धर्माचार्यों, शिक्षकों और प्रशिक्षकों ने इस अवसर पर शिष्यों को धर्म, सेवाभाव, आत्मज्ञान और निरंतर सीखने का संदेश दिया. वहीं कई ऐसे गुरु भी हैं, जो बिना किसी अपेक्षा के शिक्षा, खेल, कला और संस्कारों के माध्यम से हजारों लोगों के जीवन को नई दिशा दे रहे हैं.

गुरु पूर्णिमा पर शहर के गुरुओं ने दिया सद्मार्ग पर चलने का संदेश

शिष्यों के तर्कों का उत्तर देने वाला ही असली गुरु

दादू महाराज

आजकल युवा पीढ़ी में सभी गुरु बनाना चाहते हैं. शिष्य बनने की इच्छा युवाओं में नहीं है. आज की युवा पीढ़ी तर्क करती है. तर्कों का सही जवाब और उत्तर देना, जिसको आता है या जिसके पास है, वही असली गुरु है. वहीं गुरु शिष्ट परम्परा का निर्वहन कर सकता है. गुरु पूर्णिमा पर मेरा शिष्यों और समाजजन को एक साफ संदेश है कि गुरु वो जिसके सामने या पास जाते ही व्यक्ति अपनी सब्ज समस्या भूल जाएं और मन में एक भाव जागृत रहे कि मैं गुरु के पास आ गया. मेरी सारी समस्याओं का निराकरण अब हो जाएगा. आज की आपाधापी भरी जिंदगी में युवा विभिन्न समस्याओं एवं कष्टों के कारण डिप्रेशन की बीमारी से जूझ रहे हैं. उसके प्रश्नों एवं तर्कों का उचित परामर्श के साथ निवारण का उपाय आपके पास होना चाहिए. जब युवा पीढ़ी को सही परामर्श मिलता है तो गुरु को महत्व एवं मानना शुरू कर देती है.

पाद पूजन – सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक
स्थान – गजासीन शनि मंदिर परिसर, उषा नगर एक्सटेंशन

भागवत पुराण को सही अर्थों में परिभाषित करने की जरूरत

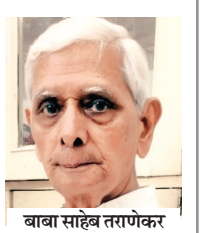

बाबा साहेब तराणेकर

आज समाज में जातिगत भेदभाव बहुत बढ़ गया है. जाति भेद को खत्म करने के लिए भागवत पुराण को सही अर्थों में फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता है. आज गुरु शिष्य परंपरा में मायने बदल गये है. कई रूढ़िवादी परम्परा को नाना साहेब तराणेकर के तोड़ा है. गुरु पूर्णिमा पर समाज और शिष्यों को यहीं संदेश है कि वे जाति भेद से ऊपर उठकर कर मानव समाज की सेवा करें. सत्य और धर्म के मार्ग पर चलकर सद्भाव बढ़ाए और वर्ग भेद को खत्म करें. नाना भाऊ समाज को जोड़ने का कदम करते रहे और उनका साफ संदेश होता था कि जो काम धर्म के मार्ग पर चलकर भटके लोगों को सही दिशा दे, वही गुरु का काम है. आज भी नाना साहेब तराणकर के धर्म आधारित मार्ग पर सर्वजन समाभाव में महिलाओं को तर्पण, रुद्र अभिषेक, कर्मकांड करने की छूट देकर सिखाया है. वैदिक परंपरा को सामान्य वर्ग में पहुंचाना ही, गुरु शिष्य परंपरा है.

पाद पूजन – दोपहर 12 बजे से
स्थान – नाना साहेब तराणकर संस्थान, स्नेहलता गंज, नयापुरा, जेल रोड

शिष्य धर्म का पालन कर सद्मार्ग पर चलें

विश्वेश्वरानंद गिरि

गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर में अपने शिष्यों को एक ही संदेश देना चाहता हूं कि वे धर्म का पालन करें. सदमार्ग पर चलें, तो जीवन में कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा. गुरु पूर्णिमा बहुत लोगों को पता नहीं है कि क्यों मनाई जाती है. यह गुरु से जुड़ने के बाद व्यक्ति को मालूम पड़ता है कि गुरु अपने शिष्य की हर समस्या का निराकरण और धर्म अनुसार ज्ञान देकर सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा देता है. गुरु पूर्णिमा महर्षि वेद व्यास की जयंती के अवसर पर मनाई जाती है, जिन्होंने चारों वेद की रचना की है.

पाद पूजन – 8 बजे से दिनभर एवं गुरु पूजन 10 बजे से
स्थान – अन्नपूर्णा मंदिर परिसर, अन्नपूर्णा रोड

हर शिष्य हनुमान जैसा सेवाभाव का रास्ता अपनाएं

पं. दीपेश व्यास

आज समाज में सेवाभाव की कमी नजर आने लगी है. आमजन अपने निहित स्वार्थ के चलते राह भटक रहे है. ऐसे में सही राह सिर्फ गुरु दिखाते है. गुरु पूर्णिमा के अवसर पर मेरा सभी समाजजन और शिष्यों को यहीं गुरु मंत्र है कि वे रामभक्त हनुमान की तरह निस्वार्थ सेवाभाव का रास्ता अपनाएं. आज समाज में गुरु तो बना लेते हैं, लेकिन उनके द्वारा दी गई शिक्षा पर शिष्य समर्पण से वो भाव नहीं रखते हैं, जो गुरु मंत्र देते समय बताते हैं.

पाद पूजन – सुबह 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक
स्थान – रणजीत हनुमान मंदिर परिसर, रणजीत रोड

गुरु संस्कारों एवं आत्मज्ञान के सेतु

सदगुरु अण्णा महाराज

वेद भारतीय ज्ञान परंपरा के आधार है. वेदों में धर्म, संस्कृति, विज्ञान, प्रकृति, यज्ञ, नैतिकता और जीवन दर्शन का अद्भुत सामंजस्य है. भारतीय संस्कृति में गुरु सिर्फ शिक्षक नहीं, बल्कि संस्कारों एवं आत्मज्ञान के सेतु माने जाते है. मेरा गुरु पूर्णिमा पर समाज एवं शिष्यों को यहीं संदेश है कि जात पात से ऊपर उठकर धर्म रक्षक बने. गुरु सिर्फ गुरु होता है, जाति से गुरु को मत देखिए, उनके आचरण एवं सत्कर्म से गुरु को महत्व दें.

पाद पूजन – दोपहर 1 बजे से रात 10 बजे तक
स्थान – श्री दत्त माउली सदगुरु अन्ना महाराज संस्थान, पलसीकर कॉलोनी

गुरु पूर्णिमा गुरु-शिष्य परंपरा सुदृढ़ करने का पर्व

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राकेश सिंघाई ने गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं. उन्होंने कहा कि गुरु पूर्णिमा गुरु और शिष्य के अटूट विश्वास, समर्पण और कृतज्ञता का पर्व है. इस दिन विद्यार्थी अपने गुरु के प्रति सम्मान प्रकट कर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं, जबकि गुरु अपने शिष्यों को उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीष देते हैं. उन्होंने कहा कि भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा में शिष्य गुरु के ज्ञान, संस्कार और विचारों को जीवनभर अपनाकर समाज में आदर्श स्थापित करता है. यह पर्व गुरु और शिष्य के रिश्ते को और अधिक सशक्त बनाता है.

कमजोर युवाओं को नि:शुल्क ट्रेनिंग

सरकारी नौकरी पाने का सपना देखने वाले हजारों युवाओं को तरास रहे फायरमैन ओमप्रकाश जायसवाल 26 वर्षों से सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहे आर्थिक रूप से कमजोर युवाओं को नि:शुल्क फिजिकल ट्रेनिंग देते है. उनसे ट्रेनिंग लेकर हजारों बच्चे आर्मी और पुलिस में सेंवाए दे रहे है. फिलहाल उनसे करीब 200 बच्चे फिजिकल ट्रेनिंग ले रहे है. उनका कहना है कि शिष्यों की सफलता ही उनकी गुरु दक्षिणा है.

नि:शुल्क ट्रेनिंग देकर बॉक्सर तैयार कर हैं कश्यप

नेहरू स्टेडियम बॉक्सिंग एकेडमी में वर्षों से नि:शुल्क कोचिंग दे रहे कोच नर्मदा कश्यप देश के लिए नए बॉक्सर तैयार कर रहे है. 22 वर्षों सें बगैर फेडरेशन की मदद लिए कश्यप युवाओं को बॉक्सिंग के गुर सीखा रहे हैं. उनके तैयार किए बॉक्सर आज इंटरनेशनल व नेशनल लेवल पर देश व प्रदेश का नाम रोशन कर रहे हैं. उनका मानना है कि शिष्य अगर गुरु की दिखाई राह पर चलेगा तो सफल जरूर होगा.

छोटी उम्र के बच्चों को दे रहे गीता-रामायण का ज्ञान

इस्कॉन मंदिर से जुड़े प्रहलाद संडे स्कूल द्वारा स्कूली बच्चों को श्रीमद भगवद गीता के श्लोक, रामायण और वैष्णव भजन के माध्यम से सनातन, संस्कार और सुपंथ का ज्ञान दिया जाता है. गुरु महासुंदरी राधा बताते हैं कि प्रत्येक रविवार 2 घंटे 3 से 15 वर्ष की उम्र के बच्चों को धर्म और ध्यान के बारे में बताया जाता है. स्टोरीटेलिंग से बच्चों को भगवद गीता और रामायण का ज्ञान मिलता है. उनका कहना है कि जैसे ज्ञान के बिना गुरु नहीं, वैसे गुरु के बिना शिष्य नहीं.

आत्मविश्वास और संघर्ष का पाठ पढ़ाता है गुरू

किसी भी खिलाड़ी की सफलता के पीछे उसके गुरु की मेहनत और मार्गदर्शन छिपा होता है. मध्य प्रदेश में बिलियर्ड्स और स्नूकर को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाले ऐसे ही समर्पित प्रशिक्षकों में सुजीत गेहलोत का नाम प्रमुखता से लिया जाता है. वे पिछले 17 वर्षों से मध्य प्रदेश बिलियर्ड्स एंड स्नूकर एसोसिएशन से बतौर कोच जुड़े हुए हैं और लगातार नई प्रतिभाओं को तराशने का कार्य कर रहे हैं. सुजीत गेहलोत ने केवल खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दिया है. उनका मानना है कि गुरु केवल तकनीक नहीं सिखाता, बल्कि आत्मविश्वास और संघर्ष का पाठ भी पढ़ाता है.

जनकल्याण के लिए हो ज्ञान का उपयोग

तहसील विधिक सेवा समिति देपालपुर के अध्यक्ष एवं जिला न्यायाधीश हिदायत उल्ला खान ने गुरु पूर्णिमा का महत्व बताते हुए कहा कि गुरु पूर्णिमा केवल गुरु के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता का पर्व नहीं, बल्कि उनके द्वारा दिए गए ज्ञान, संस्कार, सत्य, अनुशासन और मानवता को जीवन में उतारने का संकल्प लेने का अवसर है. गुरु ज्ञान का वह दीप हैं, जो अज्ञान का अंधकार दूर कर जीवन को सही दिशा प्रदान करते हैं. गुरु की शिक्षाओं को न्याय व्यवस्था से जोड़ते हुए श्री खान ने कहा कि ज्ञान का उपयोग जनकल्याण, शक्ति का उपयोग संरक्षण और अधिकारों का उपयोग जिम्मेदारी के साथ होना चाहिए.

नृत्य कला के माध्यम सें वर्षो से अनवरत जारी है गुरु शिष्य परंपरा

प्राचीन नाट्य कला भरतनाट्यम के संवर्धन के लिए कार्य कर रही वरदा कला संस्थान की संचालिका श्रुति राजीव शर्मा 2000 से अधिक बच्चियों को भरतनाट्यम का प्रशिक्षण दे चुकी है. उनसे प्रशिक्षण ले चुकी 8 बच्चियों का अरंगेत्रम हुआ है. अरंगेत्रम पहली अधिकारिक एकल प्रस्तुति होती है। उन्हें संस्कृति मंत्रालय द्वारा रेपेटरी मिली है. गुरु शिष्य परंपरा कों लेकर उनका मानना है कि व्यक्तिव के निर्माण के लिए जीवन में गुरु का होना बहुत जरुरी है.

जीवन जीने की कला सिखाते हैं गुरू

आईपीएस अकादमी की प्रो. अलिबा हैदर ने कहा कि गुरु केवल ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि विद्यार्थी के व्यक्तित्व, चरित्र और भविष्य का निर्माण भी करते हैं. उनकी शिक्षा तभी सार्थक होती है, जब छात्र में सीखने की सच्ची इच्छा और अच्छे संस्कार हों. एक आदर्श छात्र में विनम्रता, अनुशासन और जिज्ञासा का होना आवश्यक है. विनम्रता उसे सीखने योग्य बनाती है, अनुशासन सफलता की राह दिखाता है और जिज्ञासा नए ज्ञान की ओर प्रेरित करती है. इसके साथ परिश्रम, धैर्य, ईमानदारी, सम्मान और कृतज्ञता जैसे गुण भी विद्यार्थी को जीवन में आगे बढ़ाते हैं. प्रत्येक छात्र का कर्तव्य है कि वह अपने गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास और समर्पण का भाव बनाए रखें.

गुरू-शिष्य का रिश्ता निरंतर सीखने की यात्रा

27 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय रहकर दुर्गेश भटनागर हजारों विद्यार्थियों के भविष्य को नई दिशा दे रहे हैं. वे यू.एस. इंटरनेशनल स्कूल के प्राचार्य होने के साथ-साथ वीनस भटनागर साइंस इंस्टीट्यूट के संस्थापक एवं संचालक भी हैं. दुर्गेश भटनागर का मानना है कि हर विद्यार्थी अपने आप में एक यूनिवर्सल सॉल्वेंट है. सही मार्गदर्शन मिलने पर वह किसी भी कठिन विषय और चुनौती को समझने तथा हल करने की क्षमता विकसित कर सकता है. उनका प्रयास केवल परीक्षा में अच्छे अंक दिलाना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, तार्किक सोच और जीवन में आगे बढ़ने का साहस विकसित करना है.

जिम्मेदारी और आत्मविश्वास के साथ संवेदनशीलता अपनाएं

आईपीएस अकादमी के इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन के प्राचार्य प्रो. अमीन कुरैशी गुरु अपने शिष्य में केवल सफलता नहीं, बल्कि सही सोच, अच्छे संस्कार और श्रेष्ठ चरित्र देखना चाहता है. एक सच्चा गुरु चाहता है कि उसका शिष्य ज्ञान के साथ विनम्रता, अनुशासन के साथ जिम्मेदारी और आत्मविश्वास के साथ संवेदनशीलता को अपनाए. गुरु की वास्तविक उपलब्धि तब होती है, जब उसका शिष्य उसके बताए मार्ग पर चलते हुए स्वयं निर्णय लेने और दूसरों के लिए प्रेरणा बनने योग्य हो जाए. गुरु चाहता है कि शिष्य प्रश्न पूछे, सीखने की जिज्ञासा बनाए रखे, असफलताओं से घबराए नहीं और निरंतर स्वयं को बेहतर बनाने का प्रयास करे. अंततः गुरु के लिए शिष्य की सबसे बड़ी सफलता यही है कि वह एक अच्छा विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि एक अच्छा इंसान और जिम्मेदार नागरिक बने.

जीवन का सही दिशा दिखाए वह गुरू

भारतीय संस्कृति में गुरु को केवल शिक्षक नहीं, बल्कि जीवन का पथप्रदर्शक माना गया है. गुरु वह नहीं जो केवल पुस्तकों का ज्ञान दे, बल्कि वह भी गुरु है जो जीवन जीने की सही दिशा दिखाए. जीवन के हर मोड़ पर मिलने वाले अनुभव, परिस्थितियाँ और प्रेरणादायक व्यक्तित्व भी हमारे गुरु बन जाते हैं. गुरु पूर्णिमा हमें विनम्रता, कृतज्ञता और अपने गुरुओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है. वर्चुअल वॉयज कॉलेज की प्राचार्य सुनैना जैन का मानना है कि गुरु पूर्णिमा केवल एक धार्मिक या सांस्कृतिक पर्व नहीं, बल्कि अपने जीवन में मार्गदर्शन देने वाले प्रत्येक व्यक्ति के प्रति आभार व्यक्त करने का दिन है. वे कहती हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार, संवेदनशील और श्रेष्ठ इंसान बनना है. सुनैना जैन कहती हैं कि गुरु केवल मार्ग दिखा सकते हैं, उस मार्ग पर चलना विद्यार्थी का कर्तव्य ह. यही कारण है कि प्रत्येक विद्यार्थी को सीखने की प्रक्रिया को कभी समाप्त नहीं होने देना चाहिए.

जीवन को सही दिशा देने के संकल्प का दिन

कुंभज कॉमर्स क्लासेस के डॉ. युवराज कुंभज ने कहा कि गुरु पूर्णिमा केवल गुरु के सम्मान करने का दिन नहीं, बल्कि अपने जीवन को सही दिशा देने के संकल्प लेने का दिन है. याद रखें, ज्ञान तभी सार्थक होता है जब वह आपके व्यवहार, चरित्र और कर्म में दिखाई दें. जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ आएँ, सत्य, ईमानदारी, अनुशासन और परिश्रम का मार्ग कभी नहीं छोड़े. समय का सदुपयोग करें और अपने लक्ष्य के प्रति पूरी निष्ठा रखें. जो व्यक्ति धैर्य, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच बनाए रखता है, वही अंततः सफलता प्राप्त करता है. अपने ज्ञान का उपयोग समाज और राष्ट्र की सेवा में करें तथा अपने संस्कारों से अपने परिवार और गुरुजन का नाम रोशन करें.

गुरु पूर्णिमा पर एक सीख... खुद के भी गुरु बनिए

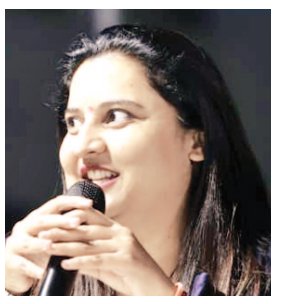

नेहा शर्मा ने बताया कि हर साल गुरु पूर्णिमा आती है और हम अपने गुरुओं को याद करते हैं. उनके प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं, क्योंकि उन्होंने हमें जीवन में आगे बढ़ना सिखाया. लेकिन आज की पीढ़ी के लिए मैं एक और बात कहना चाहती हूँ- दुनिया की बातें सुनते-सुनते कहीं खुद की आवाज़ सुनना मत भूलिए. करियर हो, पढ़ाई हो, रिश्ते हों या जीवन का कोई भी फैसला— सबसे पहले खुद को समझना और खुद को महत्व देना जरूरी है. गुरु हमें रास्ता दिखाते हैं, लेकिन उस रास्ते पर चलना हमें खुद ही होता है। इसलिए इस गुरु पूर्णिमा पर अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण शिष्य और सबसे महत्वपूर्ण गुरु- खुद- को भी पहचानिए. खुद से एक वादा कीजिए कि अब आप दूसरों की अपेक्षाओं के साथ-साथ अपने सपनों को भी महत्व देंगे. अपने करियर, अपनी पहचान, अपने आत्मसम्मान और अपनी खुशियों पर भी उतना ही काम करेंगे क्योंकि अंत में, अगर आपने खुद से किए हुए वादे निभा लिए, तो जीवन की आधी लड़ाई वहीं जीत लेंगे.

विश्वास, सम्मान और संस्कार का बंधन

पारुल यूनिवर्सिटी वडोदरा गुजरात की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. प्राजक्ता अंकलीकर ने कहा कि भारतीय संस्कृति में गुरु और शिष्य का संबंध सबसे पवित्र रिश्तों में माना गया है. यह केवल शिक्षा देने और लेने का संबंध नहीं, बल्कि विश्वास, सम्मान और संस्कार का बंधन है. गुरु शिष्य को ज्ञान के साथ जीवन जीने की सही दिशा देता है, जबकि शिष्य अपने गुरु के प्रति श्रद्धा, अनुशासन और समर्पण का भाव रखता है. एक आदर्श गुरु निष्पक्ष, प्रेरणादायक और मार्गदर्शक होता है. वहीं आदर्श शिष्य जिज्ञासु, विनम्र और सीखने के लिए सदैव तत्पर रहता है. दोनों के बीच खुला संवाद, आपसी सम्मान और विश्वास इस संबंध को मजबूत बनाते हैं.

सेवानिवृत्ति के बाद भी शिक्षा की अलख जगा रहे

गुरु केवल विषय का ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह अपने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का निर्माता भी होता है. गुरु पूर्णिमा के अवसर पर ऐसे ही एक समर्पित शिक्षक शेखर शाह की शिक्षा-यात्रा प्रेरणा देती है। अहमदाबाद विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होने के बाद भी उन्होंने शिक्षण को नहीं छोड़ा. आज वे अपने घर पर बच्चों को अंग्रेज़ी पढ़ाकर उन्हें भाषा के साथ आत्मविश्वास और जीवन-मूल्यों की भी शिक्षा दे रहे हैं. शेखर शाह का मानना है कि एक अच्छा शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होता. विद्यालय या विश्वविद्यालय की नौकरी समाप्त हो सकती है, लेकिन ज्ञान बाँटने का दायित्व जीवनभर चलता है. यही सोच उन्हें आज भी विद्यार्थियों के बीच सक्रिय बनाए हुए है. उनके अनुसार अंग्रेज़ी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि दुनिया से जुड़ने का माध्यम है. इसलिए वे बच्चों को रटने के बजाय समझने, बोलने और आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखने की कला सिखाते हैं. शेखर शाह कहते हैं कि किसी भी विद्यार्थी की सफलता केवल उसकी बुद्धिमता से तय नहीं होती.

जीवन को दिशा देने वाला पथ प्रदर्शक

आईपीएस अकादमी की इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन की सहायक प्राध्यापक डॉ. रोशनी कुमारी ने कहा कि गुरु केवल शिक्षा देने वाला नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाला पथप्रदर्शक होता है. वह अपने शिष्य में विनम्रता, जिज्ञासा, अनुशासन, धैर्य, सत्यनिष्ठा, संवेदनशीलता और नैतिकता जैसे गुणों का विकास देखना चाहता है, क्योंकि यही गुण उसे केवल सफल नहीं, बल्कि आदर्श और चरित्रवान नागरिक बनाते हैं. आज कृत्रिम बुद्धिमता और डिजिटल युग में ज्ञान प्राप्त करना सरल हो गया है, किंतु विवेक, संस्कार और मानवीय मूल्यों का संचार केवल गुरु ही कर सकता है. एक सच्चा गुरु कभी अपने शिष्य को अपनी छाया नहीं बनाना चाहता, बल्कि उसे इतना समर्थ बनाना चाहता है कि वह स्वयं नई राह बनाए, समाज के लिए प्रेरणा बने और मानवता के कल्याण में अपना योगदान दे. गुरु के लिए सबसे अमूल्य गुरुदक्षिणा किसी उपहार में नहीं, बल्कि शिष्य के श्रेष्ठ आचरण, उत्कृष्ट चरित्र और समाजहित में ज्ञान के सदुपयोग में निहित होती है.